Journal of Research in Education - ISSN (P) : 2347-5676
ISSN (O) : 2582-2357

आदिवासी और गैर–आदिवासी संस्कृतियों का व्यक्तित्व विकास एवं निष्पत्ति पर प्रभाव

डा0 अनुराधा

सार (*Abstract*)

प्रस्तुत शोध में आदिवासी और गैर–आदिवासी छात्रों की संस्कृतियों का उनके व्यक्तित्व विकास एवं निष्पति पर तुलनात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया है। झारखंड और बिहार राज्यों के छात्रों एवं छात्राओं को आधार बनाया गया है। व्यक्तित्व के अंतर्मुखी–बहिर्मुखी, आत्मावबोध, निर्भरता–आत्म–निर्भरता, मनः स्थिति, समंजन एवं चिन्ता आयामों का मापन किया गया है। इसके अतिरिक्त दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं के निष्पति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। दोनों समूहों से छात्रों एवं छात्राओं को शामिल किया गया है। परिणामों के विश्लेषण में टी. टेस्ट का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में आदिवासी छात्र–छात्राओं की निष्पति–स्तर में सार्थक अंतर पाया गया।

व्यक्तित्व के आयामों की तुलना में पाया गया कि आदिवासी छात्राएँ गैर आदिवासी छात्राओं से अधिक बहिर्मुखी है। गैर आदिवासी छात्र आदिवासी छात्रों के अपेक्षा अधिक आत्मनिर्भर पाये गये। किन्तु गैर आदिवासी छात्रों में चिन्ता का स्तर उच्च पाया गया। समंजन में भी गैर आदिवासी छात्र आदिवासी छात्रों के अपेक्षा अधिक समंजित पाये गये।

मूल शब्द – आदिवासी और गैर–आदिवासी छात्र, व्यक्तित्व विकास

प्रस्तावना (Introduction)

संस्कृति का अर्थ अत्यंत व्यापक माना जाता है। इसमें मनुष्य का रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार, भाषा–साहित्य, धर्म, मूल्य, सिद्धांत और वि वास सभी कुछ आते हैं। ओटावे संस्कृति को समाज का संपूर्ण जीवन– ौली मानते हैं। टेलर (1871) का कथन है कि संस्कृति वह जटिल पूर्णता है जिसमें उन सब ज्ञान, वि वास, कला, नैतिकता, नियम, रीति–रिवाज और इसी प्रकार की अन्य क्षमताओं और आदतों का समावे ा होता है जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में सीखता है। सुदरलैंड एवं उडवर्थ के अनुसार संस्कृति में वह प्रत्येक वस्तु सम्मिलित होती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जा सकती है। किसी भी जन समुदायक की संस्कृति उसकी सामाजिक बिरासत होती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संसार के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों ने भिन्न–भिन्न भाषाओं, रहन–सहन और खान–पान की विधिओं एवं रीति–रिवाजों का विकास किया है। उनके विचारों अर्थात मूल्यों मान्यताओं और वि वासों में भी बड़ा अन्तर है। यही कारण है कि संसार के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों के भिन्न–भिन्न सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ हैं। प्रारंभ में आवागमन के साधन सूलभ नहीं थें। एक क्षेत्र के लोग एक क्षेत्र के समाज और उसके संस्कृति दूसरे क्षेत्र के समाज और संस्कृति से बहुत भिन्न होती थी। आवगमन के साधनों के कारण मनुष्य का संर्पक क्षेत्र बढ़ गया है और आज प्रायः सभी संस्कृतियों में कई संस्कृतियों का सम्मिश्रण दिखायी देता है। किसी भारतीय के कमरे में एक ओर तख्त और उसपर बिछी कालीन और मसनद तथा दूसरी ओर सोफा सेट को देखकर इस सत्य का सहजा अनुमान लगाया जा सकता है। भारतीय वेशभूषा में पा चात्य वेशभूषा को प्रवे ा और पा चात्य वेशभूषा का प्रवे ा भी इसी सत्य का उद्घोषक है।

यदि आज उन्नति ील दे ों की सभ्यता और संस्कृति पर दृष्यिात किया जाए तो उनमें अनेक समान तत्वों को समान रूप से देखा जा सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि अब संसार एक वि वव्यापी संस्कृति के निर्माण की ओर अग्रसर है।

व्यक्तित्व से व्यक्ति के व्यवहारों का बोध होता है। उसके व्यवहारों से ही उसके व्यक्तित्व के विषय में जानकारी मिलती है। आलपोर्ट (1937) ने लिखा है कि '' व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्दर के उन सभी मनः भाारीरिक तंत्रों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के प्रति उसके अभियोजनों को निर्धारित करते है। इस प्रकार व्यक्तित्व अभियोजन का आधार माना जाता है। व्यक्तित्व निर्माण में संस्कृति का अत्यधिक महत्व होता है। भर्रे एवं कलकहान (1956) के अनुसार संस्कृति हमारी समस्याओं के तैयार समाधानों का भण्डार होती है व्यक्तित्व द्वारा ही निर्धारित होता है कि किसी परिस्थिति में हमें कैसे व्यवहार की आ ाा करनी है और दूसरो के प्रति हमें कैसा व्यवहार करना है।

आदिवासी प्रकृति के अनन्य पुजारी और परंपरागत आद ार्ो के भक्त हैं। गुरूजनों के आदे ा निर्दे ा ही इनके आद ार्ा हैं और किसी तरह संकटपूर्ण स्थितियों में अपनी जीविका संचालित करना ही इनके जीवन का लक्ष्य है। यद्वपि इनके लिखित धर्मग्रंथ नहीं हैं फिर भी इनका मौखिक धर्म ग्रंथ अति मनोरंजक, प्रेरणादायक और सुस्थिर है। सभी प्रमुख आदिम जातियों का धार्मिक वि वास प्रायः एक सा है। केवल इनके देवी–देवताओं के नाम अलग हैं। इन जातियों में प्रमुखता की दृष्टि से मुंडा, उरॉव, खड़िया, संथाल आदि उल्लेखनीय है। इनके प्रकृति देवताओं में ''बुबोंगा'' (पर्वतदेव) ''इकिर बोंगा'' (गहराई का देव) आदि उल्लेखनीय है।

अध्ययन के उद्देश्य

उपयुर्क्त विवेचन में हमने देखा कि जिस संस्कति में बालक पलता और बढ़ता है उस संस्कृति के अनुरूप ही उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। इस दृष्टि से आदिवासी बालकों और गैर आदिवासी बालकों में उनके संस्कृति के अनुसार ही व्यक्तित्व का विकास होगा। दोनों संस्कृति के पारंपरिक वेष–भूषा, रहन–सहन, पर्व त्योहार, रीति–रिवाज एवं वि वास में भिन्नता होती है। उपयुर्क्त विवेचन के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन के निम्नाकिंत उद्दे य निर्धारित किये गये।

1. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के संपूर्ण व्यक्तित्व में अंतर जानना।

2. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं में अंतर्मुखी और बर्हिमुखी स्वरूप को जानना।

3. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के आत्मावबोध में अंतर को जानना।

4. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के आत्म निर्भरता और निर्भरता के स्तर को जानना।

5. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं में मनः स्थिति में अंतर को जानना।

6. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के समंजन के अंतर

को जानना।

7. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के चिन्ता के स्तर को जानना।

8. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं की निष्पति के स्तर में अंतर को जानना।

अध्ययन विधि

समस्याः

इस अध्ययन में निम्नांकित प्र नों के उत्तर पाने के प्रयास किये गये हैं:

1. क्या आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों में भिन्न हैं या समान है?

2. क्या आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ भौक्षिक निष्पति में समान हैं?

परिकल्पनाएँ

उपयुर्क्त समस्याओं से संबंधित निम्नांकित नल परिकल्पनाएँ निर्मित किये गयेः

1. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में सार्थक

अंतर नहीं है।

2. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के आत्मवबोध के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के आत्मनिर्भरता और निर्भरता के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं की मनः स्थिति के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के समंजन के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

6. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

7. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के निष्पति के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रतिदर्श

यादृच्छिक विधि से राँची और छपरा जिला से एक–एक विद्यालय का चयन किया गया तथा उन विद्यालयों से 100 – 100 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

भोध उपकरण के रूप में डॉ0 मंजुरानी अग्रवाल द्वारा निर्मित ''बहुआयामी व्यक्तित्व संसूची का उपयोग किया गया है। निष्पति लब्धांक हेतु विद्यालयों के अंक पत्र का उपयोग किया गया।

विश्लेषण एवं परिणाम

वि लेषण के बाद प्राप्त परिणाम सारणी –1 में दिखाया गया है:

सारणी – 1

प्राप्त परिणाम

क्रम सं0	समूह	परिवर्त्य	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
1	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ	अनतर्मुखी–बहिर्मुखी	0.37	सार्थक नहीं
2	आदिवासी छात्र–छात्राएँ	तथैव	1.48	सार्थक नहीं
3	गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ	तथैव	0.54	सार्थक नहीं
4	आदिवासी एवं गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	0.76	सार्थक नहीं
5	आदिवासी एवं गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	2.10	0.05 स्तर पर सार्थक
6	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ	आत्मबोध	1.20	सार्थक नहीं
7	आदिवासी छात्र–छात्राएँ	तथैव	1.20	सार्थक नहीं
8	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र	तथैव	1.25	सार्थक नहीं
9	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र	तथैव	0.60	सार्थक नहीं
10	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	1.58	सार्थक नहीं
11	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ	निर्भरता–आत्मनिर्भरता	1.56	सार्थक नहीं
12	आदिवासी छात्र–छात्राएँ	तथैव	0.30	सार्थक नहीं
13	गैर आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	3.15	सार्थक अंतर 0. 01

14	आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्र	तथैव	3.18	सार्थक अंतर 0. 01
15	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	0.15	सार्थक नहीं
16	आदिवासी छात्र–छात्राएँ गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ	मनःस्थिति		सार्थक नहीं
17	आदिवासी छात्र आदिवासी छात्राएँ	तथैव	0.90	सार्थक नहीं
18	गैर आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	0.00	सार्थक नहीं
19	आदिवासी गैर आदिवासी छात्र	तथैव	0.67	सार्थक नहीं
20	आदिवासी गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	1.41	सार्थक नहीं
21	आदिवासी गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ	समंजन	1.64	सार्थक नहीं
22	आदिवासी छात्र आदिवासी छात्राएँ	तथैव	1.08	सार्थक नहीं
23	गैर आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	1.30	सार्थक नहीं
24	आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्र	तथैव	2.36	0.02 सार्थक
25	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	0.42	सार्थक नहीं
26	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ	चिन्ता	1.66	0.10 सार्थक
27	आदिवासी छात्र आदिवासी छात्राएँ	तथैव	0.02	0.05
28	गैर आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	0.14	सार्थक नहीं
29	आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्र	तथैव	2.83	0.01
30	आदिवासी छात्राएँ गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	2.19	0.05
31	आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ	निष्पत्ति	18.72	0.01 के उपर
32	आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	8.18	0.01 के उपर
33	गैर आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	0.79	सार्थक नहीं
34	आदिवासी छात्र गैर आदिवासी छात्र	तथैव	11.25	0.01 स्तर पर
35	आदिवासी छात्राएँ गैर आदिवासी छात्राएँ	तथैव	22.10	0.01 स्तर पर

इस अध्ययन में व्यक्तित्व के अंतर्मुखी–बहिर्मुखी, आत्मावबोध, निर्भरता–आत्मनिर्भरता, मनः स्थिति, समंजन एवं चिन्ता से संबंधित तत्वों की आदिवासी एवं गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं में समानता या असमानता की स्थितियों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

उपयुर्क्त सारणियों के अवलोकन के आधार पर निम्नांकित बातें देखने को मिलती हैः

1. व्यक्तित्व के अंतर्मुखी–बहिर्मुखी आयाम, आत्मावबोध, निर्भरता–आत्मनिर्भरता, मनः स्थिति एवं समंजन में सार्थक अंतर नहीं है किन्तु चिन्ता के स्तर में 0.10 स्तर पर विभिन्नता पायी गयी। इसके साथ ही निष्पति में दोनों समूहों में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

2. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्राओं में अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यवहारों में 0.5 स्तर पर विभिन्नता पायी गयी।

3. i. निर्भरता आत्मनिर्भरता में गैर आदिवासी छात्रों और गैर आदिवासी छात्राओं में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।
   ii. आदिवासी छात्रों और गैर आदिवासी छात्रों में भी 0.01 स्तर पर चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।
   iii. आदिवासी छात्रों और गैर आदिवासी छात्रों के बीच समंजन में 0.02 स्तर पर अन्तर पाया गया।
   iv. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के चिन्ता के स्तर में 0.10 स्तर पर अन्तर पाया गया।
   v. आदिवासी छात्रों और छात्राओं की चिन्ता को भिन्नता 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया।

vi. आदिवासी छात्रों एवं गैर आदिवासी छात्रों के बीच चिन्ता के स्तर में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

vii. आदिवासी छात्रों और गैर आदिवासी छात्रों की चिन्ता में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

viii. आदिवासी और गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं के बीच निष्पति में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

ix. आदिवासी छात्र एवं आदिवासी छात्राओं की निष्पति में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

x. आदिवासी छात्र और गैर आदिवासी छात्रों की निष्पति में 0.01 के स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

xi. आदिवासी छात्राओं और गैर आदिवासी छात्राओं की निष्पति में 0.01 के स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

निष्कर्षतः निम्नाकिंत बातें महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।

व्यक्तित्व के अंतर्मुखी बहिर्मुखी आयाम में आदिवासी छात्र–छात्राएँ और गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ समान है किन्तु आदिवासी छात्राएँ गैर आदिवासी छात्राओं की अपेक्षा अधिक बहिर्मुखी है। गैर आदिवासी छात्र आदिवासी छात्रों की अपेक्षा अधिक आत्म–निर्भर पाये गये। समंजन में भी गैर आदिवासी छात्रों में चिन्ता का स्तर उच्च पाया गया किन्तु आदिवासी छात्रों में आदिवासी छात्राओं से कम चिन्ता पायी गयी। गैर आदिवासी छात्रों में चिन्ता का स्तर उच्च पाया गया। निष्पति में गैर आदिवासी छात्र–छात्राएँ आदिवासी आदिवासी छात्र–छात्राओं की अपेक्षा उच्च पाये गये।

References

Allport, F.H. (1927). Social Psychology, Boston.

Allport, G.W. (1937). The nature of prejudice, Addition – Wesley, Reading, Aryan Shahab.

Erikson, E.H. (1950). Childhood and society, Norton, New York.

Garrett, H. (1947). Statistics in Psychology and Education, Longman Green & Co, INC., New York.

Goode, W.J. and Hatt, P.K. (1952). Methods in social research, Mc Graw-Hill Book Co. Inc., New York.

Guilford, J.P. (1952). Psychometric Methods, Mc Graw Hill Book Co., Inc., New York.

Guthrie, J.T. (1967). Expository instruction versus a discovery method. Journal of Educational Psychology.

Kerlinger, Fred. N. (1975). Foundations of Behavioral Research, Holt, Rinehart and Winston, Inc., New York.

Sharma, K.P. (1984). Soci-cultural consulates of creativity, adjustment and scholastic achievement, Ph. D., Psy., Agra Univ.

Srivastava, J.P. (1947). A study of the effect of academic and personality characteristics on the academic achievement of boys reading in class X, Ph.D. Edu., Raj. U.

Tylor, E.B. (1924). Primitive culture 7th ed. Brentano, 10.82.

Zacharia, T. (1977). Impact of attitude and interest on achievement of secondary school pupils in social studies, Ph.D, Edn., Ker. U.

•••